स्मरण पुस्तिका

श्रीनाथ विश्वविद्यालय
सौजन्य: सुखदेव महतो

वाँ श्रीनाथ

अंतर्राष्ट्रीय

हिन्दी महोत्सव

जमशेदपुर २०२४

साहित्य संस्कृति शिक्षा सृजन संगीत

२०-२२ दिसम्बर २०२४

ओं प्रहर हिन्दीमय!

आयोजक :

श्रीनाथ विश्वविद्यालय

जमशेदपुर, झारखण्ड

अध्ययन • अनुशासन • अनुग्रहण

आयोजन समिति

मार्गदर्शक
श्री सुखदेव महतो

परिकल्पना एवं कार्यक्रम निदेशक
श्री कौशिक मिश्रा

मुख्य सलाहकार
प्रो. (डॉ.) मुदिता चंद्रा
श्री दिनेश रंजन
डॉ. रामा शंकर
श्री कुमार विवेक

मुख्य संयोजक
डॉ. एस. एन. सिंह

मंच संचालन सह उद्घोषक
श्री उदय चंद्रवंशी

कार्यक्रम प्रभारी
श्री जे. राजेश

कार्यक्रम संचालक
श्रीमती शिबानी गोराई
श्री भवेश कुमार

मुख्य कार्यक्रम संचालन (कोर) समिति
श्रीमती रचना रश्मि
श्रीमती जयश्री सिंह
श्री विनय सिंह शाण्डिल्य
श्रीमती माधुरी कुमारी
श्रीमती लक्ष्मी कुमारी
श्री संजय कुमार सिंह
डॉ. दीपक शुक्ला
डॉ. मृत्युन्जय महतो
श्री जे. राजेश
श्री शशिकांत सिंह

अतिथि एवं निर्णायक समन्वय समिति
श्री जे. राजेश (प्रभारी)
श्रीमती सुमन सिंह (सह प्रभारी)
श्री भवेश कुमार
श्रीमती जयश्री सिंह
श्रीमती लक्ष्मी कुमारी
श्री शुभादीप भद्रा
डॉ. प्रीति किरण

लेखन समिति
श्री विनय सिंह शाण्डिल्य (प्रभारी)
श्रीमती रचना रश्मि (सह प्रभारी)
श्रीमती जयश्री सिंह
श्री भवेश कुमार
श्रीमती माधुरी कुमारी
श्री राधेश्याम तिवारी

निमंत्रण एवं पंजीयन समिति
श्री दिवेश कुमार (प्रभारी)
श्री रोशन कुमार (सह प्रभारी)
डॉ. अमित कुमार
डॉ. शमिमुल हक़
श्रीमती चंचला कुमारी
श्री देबकुमार राय
श्री प्रमंत महतो
श्री अंकुर श्याम
श्री शाश्वत राज
श्रीमती संगीता महतो
डॉ. देबोप्रिया सरकार
श्री लोकोकृष्णा झा

स्वागत समिति
श्रीमती मधु शर्मा (प्रभारी)
श्रीमती कनकलता (सह प्रभारी)
श्री सुभादीप भद्रा
सुश्री प्रेरणा कुमारी शर्मा
श्री सुमित कुमार
सुश्री आराधना कुमारी
सुश्री सुषमा महतो
सुश्री नेहा निहारिका

साज सज्जा समिति
श्री गणेश महतो (प्रभारी)
श्री सुहास कुमार होर (सह प्रभारी)
श्री अरुण मुखुती
श्री चन्द्रशेखर मित्रा
श्री अंजन महंती

पुरस्कार सह प्रमाण पत्र वितरण समिति
सुश्री जया रानी महतो (प्रभारी)
श्री नर्मदेश चन्द्र पाठक (सह प्रभारी)
डॉ. देबोप्रिया सरकार
श्री सूर्यजीत सिंह
सुश्री कुलविंदर कौर
सुश्री निशा कुजूर
सुश्री प्रेरणा कुमारी
सुश्री मनीषा महतो
सुश्री अमिता रानी महतो
सुश्री मेघा मेटे
श्रीमती कनक लता
श्री संदीप कुमार चौबे
श्री अंकुर श्याम

कार्यक्रम स्थल प्रबंधन समिति
श्रीमती सुमन सिंह (प्रभारी)
डॉ. प्रीति किरण (सह प्रभारी)
श्रीमती जयश्री सिंह
डॉ. पूजा श्रीवास्तव
डॉ. डॉली चक्रवर्ती
सुश्री पूजा कुमारी
श्री शिव कुमार साह
सुश्री शालिनी ओझा
श्री शैलेन कुमार साव
डॉ. दिव्यानंद कुमार
डॉ. अनिमेश मण्डल
श्री श्यामल कुमार मण्डल
डॉ. तरुण कुमार महतो
श्री हिंडोल चक्रवर्ती
सुश्री रूबी संतरा
श्री सनी कुमार

भोजन एवं आतिथ्य समिति
श्री सुधांशु शेखर महतो (प्रभारी)
श्रीमती रेखा कुमारी गोप (सह प्रभारी)
सुश्री दमयंती प्रमाणिक
श्री संदीप कुमार चौबे
श्री राहुल मुखर्जी
श्रीमती संगीता महतो

स्वच्छता एवं रखरखाव समिति
डॉ. सूर्यप्रताप सिंह (प्रभारी)
डॉ. शैलेश कुमार षाड़ंगी (सह प्रभारी)
श्री शशि शेखर सिंह
श्री एस. के. समीर
श्री लोकोकृष्णा झा
श्री कवीन्द्र कुमार
सुश्री सुनीता कुमारी
श्री गोरखनाथ दास
सुश्री मेघा मेटे

प्रिंट एवं डिजिटल मीडिया समिति
श्रीमती रचना रश्मि (प्रभारी)
श्रीमती लक्ष्मी कुमारी (सह प्रभारी)
श्री जे. राजेश
श्री भवेश कुमार
श्री अमित कुमार
श्री संजय कुमार भारती

तकनीकी प्रबंधन समिति
श्री गौरांगो (प्रभारी)
श्री शाश्वत राज (सह प्रभारी)
श्री दीपक महतो
श्री प्रमन्त महतो
श्री शशांक सावन
अमिता रानी
कमलेश्वरी वर्मा

मंच प्रबंधन समिति
श्री सीताराम महतो (प्रभारी)
श्रीमती माधुरी कुमारी (सह प्रभारी)
श्रीमती लीना महंता
सुश्री शिबानी गोराई
श्री राहुल बनिक
श्री कौशिक कुमार पाण्डेय
श्री मनोज महतो
डॉ. ओजस्विनी महंता
डॉ. सुदर्शना बनर्जी
सुश्री कमलेश्वरी वर्मा
श्री शशांक सावन
सुश्री जयश्रीमा बिस्वाल
डॉ. पिजुस मलिक
सोनी कुमारी

सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति
श्रीमती बीना महतो (प्रभारी)
श्री ओमनिश दास (सह प्रभारी)
श्री अजित मुर्मू
श्रीमती संगीता महतो
सुश्री शिबानी गोराई
श्री सुरजीत सिंह

अनुशासन एवं सुरक्षा समिति
श्री अभिषेक कुमार (प्रभारी)
श्री शशि शेखर सिंह (सह प्रभारी)
श्री सुमित कुमार
श्री राजेश रंजन
श्री रवि कान्त
श्री नीरज कुमार
श्री शशिकांत सिंह

वाहन ठहराव समिति
श्री सायन मण्डल (प्रभारी)
श्री देब कुमार राय (सह प्रभारी)
श्री चन्द्रशेखर मित्रा

प्रायोजक एवं वित्त समिति
डॉ. मृत्युन्जय महतो
श्री शशिकांत सिंह
श्री जे. राजेश

पूछताछ समिति
डॉ. देबोप्रिया सरकार (प्रभारी)
श्रीमती माधुरी कुमारी

आपातकालीन समिति
श्री अभिषेक कुमार (प्रभारी)
श्री गणेश महतो (सह प्रभारी)
श्री सूर्यप्रताप सिंह
श्री सूर्यजीत सिंह
श्री शशि शेखर सिंह

अंतर्राष्ट्रीय कार्यकारी समिति
डॉ. दीपक शुक्ला (प्रभारी)
डॉ. शमिमुल हक (सह प्रभारी)
श्री जे. राजेश
श्री शुभादीप भद्रा
डॉ. पिजुस मल्लिक

स्मरण पत्र समिति
श्री विनय सिंह शाण्डिल्य (प्रभारी)
सुश्री शिबानी गोराई (सह प्रभारी)
श्रीमती जयश्री सिंह
श्री भवेश कुमार
श्रीमती रचना रश्मि
श्री नर्मदेश चन्द्र पाठक

प्रतिभागी महाविद्यालय / विश्वविद्यालय

1. कनेक्टिकट विश्वविद्यालय, अमेरिका
2. वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ.प्र.
3. राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, राउरकेला, पश्चिम बंगाल
4. नेताजी सुभाष चंद्र बोस कॉलेज, पुटीबांध, ओडिशा
5. कुल्टी कॉलेज, कुल्टी, पश्चिम बंगाल
6. बिधान चंद्र कॉलेज, हुगली, पश्चिम बंगाल
7. अल-हफीज कॉलेज, आरा, बिहार
8. पांडवेश्वर कॉलेज, पश्चिम बंगाल
9. सेंट्रियन यूनिवर्सिटी, सीतापुर, ओडिशा
10. चाणक्य प्रबंधन संस्थान, पटना, बिहार
11. इम्पैक्ट कॉलेज, सरैया, बिहार
12. कूचबिहार पंचानन बर्मा विश्वविद्यालय, कूचबिहार, पश्चिम बंगाल
13. मिदनापुर कॉलेज (स्वायत्त), मिदनापुर, पश्चिम बंगाल
14. काजी नजरुल विश्वविद्यालय, आसनसोल, पश्चिम बंगाल
15. दिनबंधु एंड्रयूज कॉलेज, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
16. गंगाधर मेहर विश्वविद्यालय, संबलपुर, ओडिशा
17. सिस्टर निवेदिता विश्वविद्यालय, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
18. राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जमशेदपुर, झारखंड
19. साईनाथ विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड
20. आईआईटी (आईएसएम), धनबाद, झारखंड
21. गवर्नमेंट पॉलिटेक्निक भागा, धनबाद, झारखंड
22. बोकारो स्टील सिटी कॉलेज, बोकारो, झारखंड
23. कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा, झारखंड
24. जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय, जमशेदपुर, झारखंड
25. मधुसूदन महतो टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, चक्रधरपुर, चाईबासा, झारखंड
26. अल-कबीर पॉलिटेक्निक, जमशेदपुर
27. अरका जैन विश्वविद्यालय, जमशेदपुर
28. आशु किस्कु मेमोरियल एवं रबी किस्कु टीचर्स ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, सरायकेला-खरसावां
29. बीडीए कॉलेज, बोकारो, झारखंड
30. अब्दुल बारी मेमोरियल कॉलेज, गोलमुरी, जमशेदपुर
31. डी.बी.एम.एस कॉलेज ऑफ एजुकेशन, जमशेदपुर
32. गवर्नमेंट पॉलिटेक्निक आदित्यपुर, जमशेदपुर, झारखंड
33. गवर्नमेंट वूमेन पॉलिटेक्निक, जमशेदपुर, झारखंड
34. जे.के.एस कॉलेज, जमशेदपुर, झारखंड
35. जामिनीकांत बी.एड कॉलेज, सलबोनी, झारखंड
36. जमशेदपुर कोऑपरेटिव कॉलेज, जमशेदपुर, झारखंड
37. जमशेदपुर वर्कर्स कॉलेज, जमशेदपुर, झारखंड
38. करीम सिटी बी.एड कॉलेज, जमशेदपुर, झारखंड
39. करीम सिटी कॉलेज, जमशेदपुर, झारखंड
40. लाल बहादुर शास्त्री मेमोरियल कॉलेज, जमशेदपुर
41. महिला कॉलेज, चाईबासा, झारखंड
42. मणिपाल टाटा मेडिकल कॉलेज, जमशेदपुर, झारखंड
43. एमबीएनएस इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, आसनबनी
44. मॉडल कॉलेज खरसावां, सरायकेला-खरसावां, झारखंड
45. मिसेज केएमपीएम वोकेशनल कॉलेज, जमशेदपुर
46. नेताजी सुभाष विश्वविद्यालय, जमशेदपुर, झारखंड
47. पटमदा डिग्री कॉलेज, जल्ला, झारखंड
48. राम इंटर कॉलेज, जमशेदपुर, झारखंड
49. रम्भा कॉलेज ऑफ एजुकेशन, गीतिलता, झारखंड
50. स्वामी विवेकानंद कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सालबोनी, पूर्वी सिंहभूम
51. द ग्रेजुएट स्कूल कॉलेज फॉर वुमेंस, जमशेदपुर, झारखंड
52. श्रीनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, आदित्यपुर, जमशेदपुर

उद्घाटन सत्र

प्रथम दिवस (२० दिसम्बर, २०२४)

मुख्य अतिथि

- **श्रीमती सबिता महतो**
  विधायक,
  ईचागढ़ विधानसभा

विशिष्ट अतिथि

- **श्री आस्तिक महतो**
  वरीय समाजसेवी, जमशेदपुर
- **डॉ. गोविन्द महतो**
  संस्थापक कुलपति
  श्रीनाथ विश्वविद्यालय, जमशेदपुर
- **श्री बी. एम. पैनाली**
  वरिष्ठ साहित्यकार, जमशेदपुर

अतिथि सम्मान

प्रथम दिवस (२० दिसम्बर, २०२४)

प्रथम चिंतन-मनन सत्र

विषय: 'युवाओं के भावी जीवन को सशक्त बनाने में हिंदी की भूमिका'

सुश्री दिव्या माथुर
वातायन यू के की संस्थापक
फ़ेलो, रॉयल सोसाइटी ऑफ आर्ट्स, लंदन

विदेश में भी लोग हिंदी बोलकर गर्व महसूस करते हैं। हिंदी एक भाषा मात्रा नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर भी है। हिंदी को किसी अनुशंसा की आवश्यकता नहीं है, बल्कि यह अपने आप में एक सशक्त भाषा है। आज हिंदी में करियर बनाने की अपार संभावनाएं है। आज कई ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें हिंदी में रोजगार उपलब्ध हैं। हिंदी ने इंटरनेट में स्थान बनाया है, जिसकी वजह से हिंदी वैश्विक भाषा बन गई है।

आज देश-विदेश में कई ऐसी वेबसाइट हैं, जो हिंदी में पाठ्य सामग्रियां एवं कंटेंट उपलब्ध कराती हैं। प्रतिदिन हिंदी का प्रचार वैश्विक स्तर पर बढ़ता जा रहा है। एक दिन यह भाषा निश्चित रूप से विश्व पटल पर अपना मान स्थापित करेगी। हिंदी केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा और अस्मिता की पहचान भी है। यह भाषा भावनाओं को अभिव्यक्त करने की अद्भुत क्षमता रखती है, जिससे लोगों के बीच आत्मीयता और जुड़ाव बढ़ता है। हिंदी साहित्य, सिनेमा, पत्रकारिता और डिजिटल मीडिया के विस्तार ने इसे वैश्विक स्तर पर नई ऊंचाइयां दी हैं। आज विश्वभर में कई शिक्षण संस्थान और विश्वविद्यालय हिंदी भाषा के अध्ययन और शोध को प्रोत्साहित कर रहे हैं। हमें हिंदी के प्रति गर्व महसूस करते हुए इसे और समृद्ध बनाने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए।

किताबें बिकती हैं, नहीं तो प्रकाशन संस्थान बंद हो जाते। युवा आज किताब खरीदता है, जरूरत है बस उसके समय प्रबंधन करने की। डिजिटल युग में रहना अच्छा है, लेकिन अतिशयता अनुचित है और एक हिसाब से ही इसे उपयोग में लाना चाहिए। लेखक, पाठक, प्रकाशक और पुस्तकालय में एक तालमेल होना चाहिए, तभी पुस्तक संस्कृति पनपेगी। आज मुद्रित किताबों के सामने चुनौती है, लेकिन किताबें इंटरनेट पर भी है। किताबों की उपयोगिता कभी खत्म नहीं हो सकती, स्वरूप जरूर बदल सकता है।

पुस्तकें ज्ञान का आधार हैं और किसी भी समाज की बौद्धिक समृद्धि को दर्शाती हैं। डिजिटल युग में भले ही ई-बुक्स और ऑडियोबुक्स का प्रचलन बढ़ा हो, लेकिन मुद्रित किताबों की महत्ता अभी भी बनी हुई है। पाठकों को समय प्रबंधन के साथ पढ़ने की आदत डालनी होगी, जिससे पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा मिल सके। लेखक, प्रकाशक और पुस्तकालयों के बीच सामंजस्य आवश्यक है, ताकि साहित्य और ज्ञान व्यापक स्तर पर प्रसारित हो सके। पुस्तकें केवल सूचना का स्रोत नहीं, बल्कि वे हमारे चिंतन, मनन और सृजनात्मकता को भी प्रेरित करती हैं।

प्रो. कुमुद शर्मा
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, दिल्ली वि.वि., दिल्ली

सकारात्मक चीजें अक्सर नकारात्मक वातावरण से भी उभर सकती हैं, क्योंकि हर चुनौती अपने साथ सीखने और आगे बढ़ने का अवसर लाती है। डिजिटल युग में इंटरनेट और सोशल मीडिया हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं, जिससे हम विश्वभर की जानकारी और लोगों से जुड़ सकते हैं। मैं इंटरनेट का प्रयोग ज्ञानवर्धन और संवाद स्थापित करने के लिए करती हूँ, जिससे नई संभावनाओं को तलाशा जा सके। सोशल मीडिया केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि विचारों, सूचनाओं और जागरूकता के आदान-प्रदान का एक सशक्त मंच है। हालाँकि, मैं यह भी मानती हूँ कि किताबों का स्थान अद्वितीय है, क्योंकि वे गहरे चिंतन और विश्लेषण की क्षमता विकसित करती हैं। पुस्तकें सिर्फ ज्ञान का स्रोत नहीं होते, बल्कि वे मानसिक शांति और कल्पनाशीलता को भी बढ़ावा देती हैं। डिजिटल माध्यमों और पुस्तकों के बीच संतुलन बनाकर हम अपने व्यक्तित्व को संपूर्ण रूप से विकसित कर सकते हैं। आज के समय में लेखक, पाठक, प्रकाशक और पुस्तकालयों के बीच तालमेल होना आवश्यक है, ताकि पुस्तक संस्कृति जीवंत बनी रहे। मैं मानती हूँ कि किताबों की उपयोगिता कभी खत्म नहीं होगी; उनका स्वरूप बदल सकता है, लेकिन उनका महत्व सदैव बना रहेगा।

प्रो. मोर्जुम लोयी
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
बिनी यांगा शासकीय महिला महाविद्यालय, अरु. प्र.

कार्यक्रम समन्वयक

श्री कौशिक मिश्रा
वरिष्ठ सलाहकार
श्रीनाथ ग्रुप, जमशेदपुर

श्रीमती रचना रश्मि
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
श्रीनाथ विश्वविद्यालय, जमशेदपुर

प्रथम दिवस (२० दिसम्बर, २०२४)

द्वितीय चिंतन-मनन सत्र

विषय: 'वैश्वीकरण के दौर में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के मध्य सामंजस्य'

डॉ. सदानंद शाही
प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
बनारस हिन्दू वि.वि., वाराणसी

आज के समय में किताबों की खरीदारी को देखें तो युवाओं का योगदान सबसे अधिक है, जबकि शिक्षकों और विद्वानों का झुकाव अपेक्षाकृत कम हो गया है। यदि हम अपनी युवावस्था को याद करें, तो हमें यह स्पष्ट समझ आएगा कि हमने उस समय कितनी किताबें खरीदीं और ज्ञान प्राप्ति में कितना निवेश किया। वर्तमान स्थिति को समझने के लिए हमें अपने अतीत को देखने की जरूरत है। लेकिन जब हम इस संदर्भ को वैश्वीकरण से जोड़ते हैं, तो कुछ गहरी बातें सामने आती हैं। वैश्वीकरण केवल भौगोलिक सीमाओं का विलय नहीं है, बल्कि यह एक आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया है, जो दुनिया के विभिन्न हिस्सों को आपस में जोड़ती है।

भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं होती, बल्कि यह शक्ति, संस्कृति और विचारधारा से भी जुड़ी होती है। जब कोई समाज अपनी निजी भाषा से संपर्क तोड़ता है, तो वह अपनी सांस्कृतिक जड़ों से भी कटने लगता है। भाषाओं के बीच भेदभाव और प्रतिस्पर्धा तभी पैदा होती है जब एक भाषा को दूसरी भाषा पर श्रेष्ठ बताया जाता है। औपनिवेशिक मानसिकता ने इस भेदभाव को और बढ़ावा दिया, जिससे अंग्रेज़ी का वर्चस्व स्थापित है। औपनिवेशिक शासकों ने भाषा को एक औजार की तरह इस्तेमाल किया। उन्होंने स्थानीय भाषाओं को कमजोर करके अंग्रेज़ी को सत्ता, शिक्षा और प्रशासन की भाषा बनाया। आज़ादी के बाद भी यह मानसिकता बनी रही और अंग्रेज़ी को आधुनिकता, प्रगति और वैश्विक संचार का प्रतीक मान लिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि अंग्रेज़ी को सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़ दिया गया और हिंदी जैसी भाषाओं को पिछड़ा समझा जाने लगा। जब एक भाषा को श्रेष्ठ और दूसरी को गौण मान लिया जाता है, तो भाषाओं के बीच प्रतिस्पर्धा उत्पन्न होती है। अंग्रेज़ी को उच्च शिक्षा, न्यायपालिका और व्यवसाय की अनिवार्य भाषा बनाकर इसे अन्य भाषाओं पर थोप दिया गया। इस वजह से हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को वह स्थान नहीं मिल सका, जो उन्हें मिलना चाहिए था। जब कोई समाज अपनी मातृभाषा से दूर होता है, तो वह अपने मूल विचारों और पहचान से भी कटने लगता है। भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि समाज की सोच, संस्कृति और परंपराओं का दर्पण होती है।

डॉ. प्रभाकर सिंह
प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
बनारस हिन्दू वि.वि., वाराणसी

मैं विज्ञान का विद्यार्थी रहा हूँ, लेकिन मेरे मन में हिंदी भाषा के प्रति हमेशा से गहरा लगाव रहा है। मेरा पारिवारिक माहौल भी ऐसा था, जिसने मुझे हिंदी से जोड़कर रखा। विज्ञान के अध्ययन के दौरान भी मेरा हिंदी से संबंध कभी कम नहीं हुआ, बल्कि समय के साथ यह और प्रगाढ़ होता चला गया। कॉलेज के दिनों में, जब अधिकांश साथी तकनीकी विषयों और अंग्रेज़ी में लेखन की ओर झुके हुए थे, तब भी मैं हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में लिखने में रुचि रखता था। लेखन मेरे लिए न केवल अभिव्यक्ति का माध्यम था, बल्कि हिंदी भाषा के प्रति प्रेम को जीवंत बनाए रखने का एक तरीका भी था। हिंदी की सौंदर्य, अभिव्यक्ति की सहजता और इसकी व्यापकता ने मुझे हमेशा प्रेरित किया। विज्ञान और तकनीकी विषयों के बीच भी मैंने हिंदी लेखन को कभी छोड़ा नहीं। यह मेरा सौभाग्य रहा कि विज्ञान के जटिल सिद्धांतों के बीच भी हिंदी मेरी भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने का सबसे सहज माध्यम बनी रही। आज भी हिंदी के प्रति वही उत्साह और समर्पण बना हुआ है। मेरा मानना है कि किसी भी भाषा का ज्ञान होना महत्वपूर्ण है, लेकिन अपनी मातृभाषा से जुड़ाव हमें अपनी जड़ों से जोड़े रखता है। विज्ञान के विद्यार्थी के रूप में भी मैंने हिंदी को अपने व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा बनाए रखा है और यह लगाव जीवनभर बना रहेगा।

श्री ब्रजेन्द्र नाथ मिश्र
वरिष्ठ साहित्यकार, जमशेदपुर

द्वितीय दिवस (२१ दिसम्बर, २०२४)

चिंतन-मनन सत्र

विषय: 'हिंदी भाषा और प्रशासनिक कार्य : सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम'

श्री रविशंकर शुक्ला, भा.प्र.से.
उपायुक्त, सरायकेला-खरसावाँ

हम सामान्यत: उसी भाषा का प्रयोग करते हैं, जिसमें हमें आसानी होती है। इसका उद्देश्य भाषा के लचीलापन और सहजता का लाभ उठाना है।यदि हम हिंदी में पढ़ना-लिखना जारी रखें, तो हिंदी को वैश्विक स्तर पर स्थान मिलने की संभावनाएं बढ़ेंगी। प्रशासनिक हिंदी में तत्सम शब्दों को अपनाया गया है।यदि कोई नई भाषा अपनाई जाए, तो वह दुविधा की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। हिंदी ने उर्दू और फ़ारसी जैसे भाषाओं के शब्दों को अपनाया है, जो उसकी स्वीकार्यता और लचीलापन दर्शाता है।एक भाषा जितनी अधिक अन्य भाषाओं के साथ संपर्क रखती है, उतनी ही अधिक दीर्घायु होती है। किसी भी भाषा की वैश्विक स्थिति उस भाषा को बोलने वालों की संख्या पर निर्भर करती है। हिंदी को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए इसे बोलने और उपयोग करने वालों की संख्या को बढ़ाना आवश्यक है। भाषा का विकास और उसका विस्तार तभी संभव है, जब हम उसका नियमित प्रयोग करें और उसे अन्य भाषाओं के साथ सामंजस्य में रखें।

भाषा का अस्तित्व और विकास उसके प्रयोग पर निर्भर करता है। यदि हम हिंदी को प्रशासन, शिक्षा, विज्ञान और तकनीकी क्षेत्रों में अधिक अपनाएं, तो इसकी उपयोगिता और प्रभावशीलता बढ़ेगी। डिजिटल युग में हिंदी कंटेंट की उपलब्धता बढ़ने से इसका वैश्विक प्रसार संभव है। हिंदी को सरल और व्यवहारिक बनाकर इसे और अधिक लोगों तक पहुँचाया जा सकता है। साथ ही, अनुवाद और बहुभाषीय संवाद को प्रोत्साहित कर हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सशक्त किया जा सकता है।

श्री अनन्य मित्तल, भा.प्र.से.
उपायुक्त, पूर्वी सिंहभूम

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम होती है, जिसका उद्देश्य विचारों और भावनाओं को सहजता से व्यक्त करना है। यदि भाषा ही संप्रेषण में बाधा बन जाए, तो उसका मूल उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है। इसलिए व्यक्ति को वही भाषा अपनानी चाहिए, जिसमें वह सहज महसूस करे और अपनी बात प्रभावी ढंग से रख सके। विशेष रूप से शिक्षण और प्रशासनिक क्षेत्र में, भाषा का चयन अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है। जब कोई पदाधिकारी हिंदी में संवाद करता है, तो यह न केवल उसकी अभिव्यक्ति को सरल और प्रभावी बनाता है, बल्कि विद्यार्थियों के मन में हिंदी के प्रति सम्मान और आत्मीयता भी उत्पन्न करता है। शिक्षा जगत में विद्यार्थियों पर उनके शिक्षकों, प्रशासकों और पदाधिकारियों की भाषा का गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि उच्च पदों पर बैठे लोग हिंदी में संवाद करते हैं, तो यह न केवल भाषा के प्रचार-प्रसार में सहायक होगा, बल्कि विद्यार्थियों को भी प्रेरित करेगा कि वे हिंदी में विचार करें, लेखन करें और संवाद करें। जब विद्यार्थी देखते हैं कि उनके प्रिय शिक्षक या पदाधिकारी हिंदी में संवाद कर रहे हैं, तो उनके भीतर भी इस भाषा के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। वे इसे केवल एक विषय के रूप में नहीं, बल्कि एक उपयोगी भाषा के रूप में अपनाने लगते हैं। हिंदी में संवाद करने से संदेश सरल और प्रभावी बनता है। कई बार अंग्रेज़ी जैसी विदेशी भाषा का प्रयोग केवल औपचारिकता या दिखावे के लिए किया जाता है, जिससे संप्रेषण जटिल हो जाता है। हिंदी में संवाद करने से यह समस्या समाप्त हो जाती है और विचार सीधे विद्यार्थियों तक पहुँचते हैं। भाषा केवल संप्रेषण का साधन ही नहीं, बल्कि एक संस्कृति की वाहक भी होती है। जब उच्च पदों पर बैठे लोग हिंदी में बात करते हैं, तो यह सांस्कृतिक पहचान को मज़बूत करता है और विद्यार्थियों को अपनी जड़ों से जोड़ता है। प्रशासनिक स्तर पर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए ताकि यह विद्यार्थियों के दैनिक जीवन का स्वाभाविक हिस्सा बन सके। यदि संस्थानों के प्रमुख लोग हिंदी में संवाद करेंगे, तो यह स्वाभाविक रूप से विद्यार्थियों को भी प्रेरित करेगा। उच्च शिक्षा में भी हिंदी में अध्ययन सामग्री को बढ़ावा देने की आवश्यकता है ताकि विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में भी जटिल विषयों को समझ सकें।

कार्यक्रम समन्वयक

श्री कौशिक मिश्रा
वरिष्ठ सलाहकार
श्रीनाथ ग्रुप, जमशेदपुर

श्री दिनेश कुमार रंजन
क्षेत्रीय उप निदेशक
जियाडा

तृतीय दिवस (२२ दिसम्बर, २०२४)

चिंतन-मनन सत्र

विषय: 'न्याय को आम जनजीवन तक पहुँचाने की प्रक्रिया में हिंदी की भूमिका'

न्यायमूर्ति श्री आनंदा सेन
उच्च न्यायालय, झारखण्ड

मत सोचो कि हमें अंग्रेजी नहीं आती तो हमें कुछ नहीं आता । हिंदी को लेकर अपने मन से संकोच दूर करो । हम भारतीय हैं, लेकिन हम गर्व करते हैं कि हमारे बच्चे अंग्रेजी बोलते हैं। चीन-जापान अपनी भाषा को मान्यता देते हैं, लेकिन हमारे यहां ऐसा नहीं है । माता-पिता भी अपने बच्चों के अंग्रेजी बोलने पर गौरवान्वित होते हैं। न्यायालय की प्रक्रिया दो तरह की होती है। पहले में आप अपनी बात रखते हैं, दूसरे में आपको फैसला सुनाया जाता है। आज हिंदी के प्रति लोगों का झुकाव बढ़ा है, इसलिए सुनवाई में भी हिंदी भाषा का प्रयोग होने लगा है, लेकिन फैसला सुनाने का काम अंग्रेजी में होता है। इसका कारण यह है कि हमारे फैसले को उच्चतम न्यायालय में अपील की जाती है।

आज के दौर में कई लोग यह सोचते हैं कि अगर उन्हें अंग्रेज़ी नहीं आती तो वे किसी से कमतर हैं या फिर वे सफल नहीं हो सकते। यह सोच पूरी तरह से गलत है। भाषा केवल संचार का माध्यम होती है, न कि ज्ञान और बुद्धिमत्ता की पहचान। हमें अपनी मातृभाषा हिंदी को लेकर किसी भी प्रकार का संकोच नहीं करना चाहिए। आज के समय में हिंदी का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है। पहले जहाँ बड़े फैसले, सरकारी आदेश, न्यायालय के निर्णय और प्रशासनिक कार्य अंग्रेज़ी में होते थे, वहीं अब हिंदी को भी उतना ही महत्व दिया जा रहा है। कई सरकारी दस्तावेज और नीतियाँ हिंदी में भी उपलब्ध कराई जा रही हैं, जिससे आम नागरिक आसानी से उन्हें समझ सकें। अब हिंदी भाषा में भी उच्च शिक्षा, शोध और करियर के अनेक अवसर उपलब्ध हैं। कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय और संस्थान हिंदी में शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। पत्रकारिता, लेखन, अनुवाद, सरकारी नौकरियाँ और डिजिटल मीडिया जैसे क्षेत्रों में हिंदी का व्यापक उपयोग हो रहा है। हमें यह समझना चाहिए कि भाषा ज्ञान को व्यक्त करने का साधन है, न कि सफलता का पैमाना। यह सच है कि वैश्विक स्तर पर अंग्रेज़ी एक महत्वपूर्ण भाषा है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि हिंदी कम महत्वपूर्ण है। हमें दोनों भाषाओं के बीच संतुलन बनाना चाहिए। हिंदी हमारी जड़ों से जुड़ी हुई भाषा है, जो हमें अपनी संस्कृति और पहचान से जोड़ती है।

श्रीमती सीमा समृद्धि कुशवाहा
अधिवक्ता,
सर्वोच्च न्यायालय, नई दिल्ली

निर्भया को तो तब तक न्याय नहीं मिलेगा, जब तक लड़कियाँ सुरक्षित नहीं होंगी। निर्भया को न्याय नहीं मिला है, बल्कि उसके दोषियों को सजा मिली है। निर्भया को न्याय तब मिलेगा, जब देश मे लड़कियाँ सुरक्षित होंगी।

हमारे देश में लड़की मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, आईएएस अधिकारी तो बन सकती है, लेकिन आम लड़की रात को घर से बाहर नहीं निकल सकती। हमें अपने बेटों को सिखाना होगा कि आप ऐसी स्थिति किसी लड़की के लिए न खड़ी करें कि वह घर से बाहर ही न निकले। पारिवारिक परिवेश, समाज और शिक्षा का प्रभाव लड़के और लडकियों की मानसिकता पर पड़ता है।

अक्सर ऐसा देखा जाता है कि परिवार में लड़कों को अधिक स्वतंत्रता दी जाती है, जबकि लड़कियों के ऊंचा बोलने पर रोक होती है। ऐसी लड़कियाँ जब घर से बाहर जाती हैं, तब उनसे उम्मीद की जाती है कि वह बाहर हुए अपने साथ दुर्व्यवहारों का विरोध कर के आए, जो संभव नहीं होता। वह अपने घर में ही दबी सहमी सी रहती है। इसके साथ ही लड़कियों को अधिक संवेदनशील माना जाता है, जबकि लड़कों को निर्णय लेने में अधिक स्वतंत्रता दी जाती है। इसका प्रभाव भी लड़कियों के मानसिकता पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है।

कार्यक्रम समन्वयक

श्री कौशिक मिश्रा
वरिष्ठ सलाहकार
श्रीनाथ ग्रुप, जमशेदपुर

श्री दिनेश कुमार रंजन
क्षेत्रीय उप निदेशक
जियाडा

सम्मानित अतिथिगण

श्रीमती सपना अवस्थी
बॉलीवुड गायिका
मुंबई

श्री मुकेश एस. भट्ट
बॉलीवुड अभिनेता
मुंबई

डॉ. गोविन्द महतो
संस्थापक कुलपति
श्रीनाथ विश्वविद्यालय
जमशेदपुर

श्री प्रभात कुमार बरदियार
उप विकास आयुक्त
सरायकेला-खरसावाँ

डॉ. एस एस रज्जी
पूर्व कुलपति
अरका जैन यूनिवर्सिटी
जमशेदपुर

डॉ. जूही समर्पिता
प्राचार्य,
डी.बी.एम.एस. कॉलेज
ऑफ़ एजुकेशन, जमशेदपुर

श्री मुकेश कुमार लुनायत
पुलिस अधीक्षक,
सरायकेला-खरसावां

डॉ. विनय कुमार सिंह
वित्त पदाधिकारी
कोल्हान विश्वविद्यालय,
चाईबासा

डॉ. सुनील केडिया
ब्रह्मानन्द नारायण
मल्टीस्पैशलिटी अस्पताल,
जमशेदपुर

डॉ. रामा शंकर
विभागाध्यक्ष
दंत विभाग,
टाटा मुख्य अस्पताल

श्री दिनेश कुमार रंजन
क्षेत्रीय उप निदेशक
जियाडा

डॉ. दारा सिंह गुप्ता
समन्वयक,
राष्ट्रीय सेवा योजना,
कोल्हान विश्वविद्यालय,
चाईबासा

डॉ. संजय भुइयां
आचार्य सह विभागाध्यक्ष,
शिक्षा विभाग,
जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय

डॉ. मनोज कुमार
सह आचार्य
स्नातकोत्तर शिक्षा विभाग,
कोल्हान विश्वविद्यालय,
चाईबासा

डॉ. त्रिपुरा झा
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा विभाग सह इग्नू समन्वयक,
जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय

श्री राजेश कुमार शुक्ल
उपाध्यक्ष
झारखण्ड स्टेट बार
काउंसिल

श्री बी एम पैनाली
वरिष्ठ साहित्यकार
जमशेदपुर

डॉ. राजीव रंजन राकेश
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
एस. बी. कॉलेज, चांडिल

डॉ. बी एन प्रसाद
प्राचार्य
एल.बी.एस.एम. कॉलेज,
जमशेदपुर

डॉ नेहा तिवारी
विभागाध्यक्ष, जनसंचार एवं
पत्रकारिता विभाग
करीम सिटी कॉलेज,
जमशेदपुर

श्री संजय मिश्रा
संपादक, प्रभात खबर,
जमशेदपुर, झारखंड

श्रीमती बीना नंदिनी
साहित्यकार
जमशेदपुर

डॉ. प्रतिभा प्रसाद
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
कुल्टी कॉलेज, कुल्टी
प. बंगाल

श्रीमती कविता दास
सहायक प्राध्यापक
पांडेश्वर महाविद्यालय
पश्चिम वर्धमान, प.ब.

श्रीमती माधुरी मिश्रा
साहित्यकार संस्थापिका
नव-पल्लव साहित्यिक संस्था
जमशेदपुर

श्रीमती आरती श्रीवास्तव
साहित्यकार
जमशेदपुर

डॉ. कुमारी अनुराधा
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा संकाय, एम. एड. विभाग
जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय

श्रीमती विजय शर्मा
साहित्यकार,
जमशेदपुर

सम्मानित निर्णायकगण

डॉ. रागिनी भूषण
श्री ब्रजेंद्र नाथ मिश्र
सुश्री सुमन प्रसाद
सुश्री नीतू दुबे
मो. सरताज आलम
श्रीमती संगीता झा
आर.जे. अभय
डॉ. क्षमा त्रिपाठी
श्री शुभेंदु विश्वास
श्रीमती मोर्जुम लोयी
श्री दशरथ हाँसदा
श्रीमती श्रावणी रथ मिश्रा
श्रीमती अरुणा झा
श्रीमती अर्पणा संत सिंह
श्री नरेश अग्रवाल
मोहम्मद निजाम
श्रीमती छवि दास
श्री अशोक दास
विदुषी नूपुर गोस्वामी
डॉ. मीनाक्षी कर्ण
डॉ. नीलिमा कुमारी
श्री ब्रजेश सिंह
श्री शशि भूषण
श्री संदीप सावर्ण
श्री संदीप मुरारका
श्रीमती विद्या तिवारी
श्रीमती सुधा गोयल
आर.जे. राजीव
श्री सागर चाना
श्री सिद्धार्थ सिंह
श्री शिबू बैनर्जी
श्रीमती कृष्णा सिन्हा
आर.जे. मनोज
अन्नी अमृता
आतिफ हबीब (जमशेदपुर वाला)
श्री ललन शर्मा
श्रीमती दीपिका बनर्जी
डॉ अरुण सज्जन
श्रीमती पदमा मिश्रा

पुस्तक विमोचन

पुस्तक का नाम :
निरीह शब्दों का छूटता सिरा

लेखक : सुमन कुमार झा

पुस्तक का नाम :
Marketing Management simplified

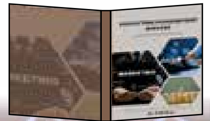

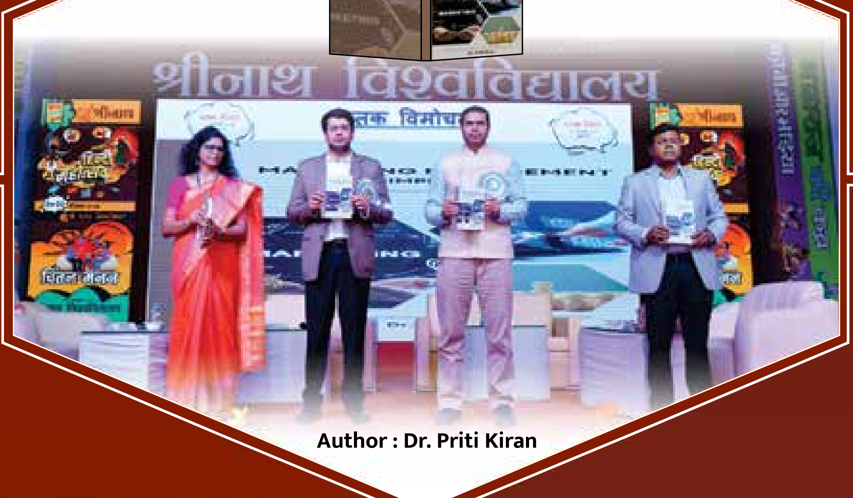

Author : Dr. Priti Kiran

पुस्तक का नाम :
Higher Education in India post NEP 2020 : Expansion, Quality and Excellence

Editor : Bhawesh Kumar

पुस्तक का नाम :
Climatology & Our Surrounding (Vol – 2)

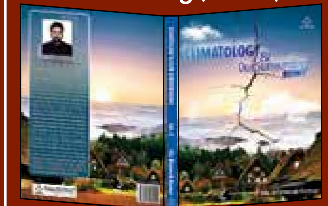

Author : Bhawesh Kumar

पुस्तक का नाम :
मुझे टूटने दो

लेखक : सुमन कुमार झा

सुर्खियाँ

श्रीनाथ विश्वविद्यालय में शुरू हुआ तीन दिवसीय हिंदी महोत्सव

अंतरराष्ट्रीय महोत्सव में हिंदी भाषा पर हुआ मंथन

श्रीनाथ विश्वविद्यालय में लहराया हिंदी का पताका

हिंदी के उत्थान में मील का पत्थर और उपयोगी साबित होगा महोत्सव : प्रभाकर सिंह

आम जनता से जुड़ाव के लिए हिंदी में बातचीत जरूरी : रविशंकर शुक्ला

आठवें श्रीनाथ अंतर्राष्ट्रीय हिंदी महोत्सव का हुआ समापन, विजेता हुए पुरस्कृत

आज के युवा किताबों से दूर नहीं हो रहे बल्कि वे तकनीक को लेकर आगे बढ़ रहे : सदानंद शाही

अगर हिंदी की स्थिति थोड़ी कमजोर है तो इसके लिए हम ही जिम्मेदार: शुक्ला

श्रीनाथ विवि की स्मारिका का विमोचन करते अतिथि • जागरण

जासं, जमशेदपुर : श्रीनाथ विश्वविद्यालय के आठवें अंतरराष्ट्रीय हिंदी महोत्सव के समापन पर न्यायमूर्ति आनंद सेन ने न्यायिक प्रक्रियाओं में हिंदी के व्यापक प्रयोग का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि आम लोगों को न्यायिक प्रक्रिया समझने के लिए हिंदी जरूरी है। निर्भया कांड की अधिवक्ता सीमा समृद्धि कुशवाहा ने महिला सुरक्षा पर जोर दिया। तीन दिवसीय महोत्सव में कई महाविद्यालयों और विश्वविद्यालय ने भाग लिया। आदित्यपुर स्थित श्रीनाथ विवि में सम्पन्न तीन दिवसीय आठवें अंतरराष्ट्रीय हिंदी महोत्सव में न्यायिक क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग पर बहस हुई। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति आनंद सेन ने कहा कि उच्चतम न्यायालय में अंग्रेजी का वर्चस्व है, परंतु आम जन के लिए न्यायिक प्रक्रिया को समझने को हिंदी जरूरी है। कहा कि धीरे-धीरे न्यायिक प्रक्रियाओं में हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा। बार काउंसिल के उपाध्यक्ष राजेश शुक्ला ने क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हिंदी के सह-अस्तित्व पर प्रकाश डाला। नियाडा के उपनिदेशक दिनेश रंजन व विवि के सलाहकार कौशिक मिश्रा ने भी सवाल-जवाब किए।

ब्रिटेन में भी हिंदी दिला रही रोजगार : दिव्या माथुर

झारखंड हाईकोर्ट में होने वाले शत-प्रतिशत जजमेंट का हिंदी में होता है अनुवाद : न्यायमूर्ति आनंद सेन

अधिकारियों को उस भाषा का प्रयोग करना चाहिए, जो आम आदमी से जुड़ा हो

हिंदी बोलने पर गर्व करें : कुलाधिपति

Eighth Srinath International Hindi Festival inaugurated at Srinath University

श्रीनाथ विश्वविद्यालय, अंतरराष्ट्रीय हिंदी महोत्सव का समापन, चिंतन-मनन सत्र भी हुआ आयोजित

हाइकोर्ट में 100% फैसले हिंदी में होते हैं : न्यायमूर्ति

निर्भया को न्याय नहीं मिला है, बल्कि उसके दोषियों को सजा मिली है : सीमा समृद्धि कुशवाहा

भाषा के माध्यम से हम अपने भाव प्रकट करते हैं : उपाध्यक्ष

हास्य कवि सम्मेलन

विजेता

प्रथम :	श्रीनाथ विश्वविद्यालय, जमशेदपुर	- हृदयांश राज
द्वितीय :	मधुसूदन महतो टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, चक्रधरपुर	- अभिषेक लाकर
तृतीय :	• रम्भा कॉलेज ऑफ एजुकेशन, गीतिलता, हाता	- विकास भगत
	• साईनाथ विश्वविद्यालय, राँची	- आदर्श आदित्य

कार्यक्रम प्रभारी
श्री संजय भारती
श्रीमती रचना रश्मि

निर्णायक
श्री ब्रजेंद्र नाथ मिश्र
डॉ. रागिनी भूषण

दीवार सज्जा

विजेता

प्रथम : **श्रीनाथ विश्वविद्यालय, जमशेदपुर**
सोमित्र कुमार महतो, प्रिंस कुमार, रिंकी कुमारी, मानस प्रधान, ऋतु राज

द्वितीय : **एन.आई.टी., जमशेदपुर**
शिवम बिट, जसवंत किशन, आयुष वर्मा, आदित्य प्रेम, अमर सक्षम टोप्पो

तृतीय : • **स्वामी विवेकानंद कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सालबोनी**
प्रीति राणा, रुचिता भूइयां, कुमारीका गिरी, संजय हल्दार, रूपाली पटनायक

• **कुल्टी कॉलेज, पश्चिम बंगाल**
वंदना कुमारी साव, सुहानी साव, सुष्मिता महतो, विशाल साव, रितिक

कार्यक्रम प्रभारी
श्री गणेश महतो
श्री अंजन मोहंती

निर्णायक
सुश्री सुमन प्रसाद
सुश्री नीतू दुबे

मुद्दे हमारे - विचार आपके

विजेता

प्रथम : **जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय, जमशेदपुर**
दिव्या कुमारी, आशा मुर्मू, पूजा कुमारी दुबे, अनुपमा, प्रिया शर्मा

द्वितीय : • **कूच विहार पंचानन बर्मा विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल**
धनमंती साह, कमला शर्मा, सुरोजीत मंडल, मानव डे, अंजलि राय

• **श्रीनाथ विश्वविद्यालय, जमशेदपुर**
हर्षदीप कौर, तूफान मंडल, रिया कुमारी, सोनल कुमारी, अशित

तृतीय : **महिला कॉलेज, चाईबासा**
अंजेल डाडेल, वंशिका कुमारी, मौसम कुमारी, श्रद्धा बोस, अर्शी साक्षी

कार्यक्रम प्रभारी
डॉ. सागरिका दास
श्रीमती आराधना कुमारी

निर्णायक
मो. सरताज आलम
श्रीमती संगीता झा

साहित्यिक कृति

विजेता

प्रथम : **काजी नजरूल विश्वविद्यालय, प.ब.**
जया गुप्ता, सालेहा तबस्सुम

द्वितीय : **डी.बी.एम.एस. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, कदमा, जमशेदपुर**
रोहित पोद्दार, लक्ष्मीकांत शर्मा

तृतीय : • **श्रीनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, आदित्यपुर, जमशेदपुर**
कविता कुमारी, जया सिंह

• **रंभा कॉलेज ऑफ एजुकेशन, गीतिलता**
प्रिया सौरव, रेशमी कुमारी महतो

कार्यक्रम प्रभारी
डॉ. अमित कुमार
डॉ. देबोप्रिया सरकार

निर्णायक
डॉ. क्षमा त्रिपाठी
डॉ. रागिनी भूषण

मुखड़े पर मुखड़ा

विजेता

प्रथम : **एन.आई.टी., जमशेदपुर**
शिवम बिट, पूजा रानी दास

द्वितीय : **श्रीनाथ विश्वविद्यालय, जमशेदपुर**
मनोज कुमार दास, देवांग कुमार दास

तृतीय : **महिला कॉलेज, चाईबासा**
काजल कुमारी दास, नीलम कुमारी दास

कार्यक्रम प्रभारी
श्री मनोज महतो
श्री राजेश रंजन

निर्णायक
श्री शुभेंदु विश्वास
श्रीमती मोर्जुम लोयी

व्यक्तित्व झांकी

विजेता

प्रथम : **महिला कॉलेज, चाईबासा**
सुप्रिया एकत, अमीषा विश्वकर्मा

द्वितीय : **मधुसूदन महतो टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, चक्रधरपुर**
विनोद गोप, नेहा जीरन चोरा

तृतीय : **काजी नजरूल विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल**
जया गुप्ता, बुलबुल साह

कार्यक्रम प्रभारी
श्रीमती शिबानी गोराई
श्रीमती अमिता रानी महतो

निर्णायक
श्री दशरथ हाँसदा
श्रीमती श्रावणी रथ मिश्रा

लिखो कहानी

विजेता

प्रथम :	स्वामी विवेकानंद कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सालबोनी	शालिनी तिवारी
द्वितीय :	• श्रीनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, आदित्यपुर, जमशेदपुर	प्रियंका साहू
	• जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय, जमशेदपुर	कुमारी निशा
तृतीय :	नेताजी सुभाष चंद्र बोस कॉलेज, संबलपुर	आशुतोष महाराणा

कार्यक्रम प्रभारी
श्रीमती लीना माहान्ता
श्रीमती संगीता कुमारी महतो
श्रीमती कनक लता

निर्णायक
श्रीमती अर्पणा संत सिंह
श्री नरेश अग्रवाल

हिन्दी टंकण

विजेता

प्रथम :	महिला कॉलेज, चाईबासा	- नीतू कुमारी
द्वितीय :	द ग्रेजुएट स्कूल कॉलेज फॉर वुमन, जमशेदपुर	- कापरा टुडू
तृतीय :	• जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय	- प्रियंका डांगी हेम्ब्रम
	• वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल कॉलेज, उत्तर प्रदेश	- अनुज यादव

कार्यक्रम प्रभारी
श्री रोशन सिंह
डॉ. शमीमुल हक

निर्णायक
डॉ. मीनाक्षी कर्ण

नुक्कड़ नाटक

विजेता

प्रथम : **करीम सिटी कॉलेज, जमशेदपुर**
अनिकेत करण, इंद्रनील पॉल, उजमा शामी, रेहाना खातून
सिद्धि कुमारी, प्रेरणा पीयूष, अभिजीत कुइला, सोनल कुमारी

द्वितीय : **जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय, जमशेदपुर**
मणि कुमारी, सृष्टि, बर्षा मोरेन कुजूर, प्रियंका कुमारी, प्रिया कुमारी शर्मा
चेताली कुमारी, आस्था सिन्हा, प्रियंका कुमारी

तृतीय : **काजी नजरूल विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल**
रिया सिंह, मानसी कुमारी, दीपा कुमारी प्रसाद, आंचल राम, बुलबुल साव
रिया कुमारी, अनुप्रिया साव, नैना कुमारी शर्मा

कार्यक्रम प्रभारी
श्रीमती कमलेश्वरी वर्मा
श्री अभिषेक रंजन
श्री कवीन्द्र कुमार

निर्णायक
मोहम्मद निजाम
श्रीमती छवि दास

लोक गीत

विजेता

प्रथम : **डी.बी.एम.एस. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, कदमा, जमशेदपुर**
तनुश्री साहा, तृषा सरकार, सौमिनी दास, इशिका, अंतरा सरकार, नीतीश कुमार घोष

द्वितीय : **द ग्रेजुएट स्कूल कॉलेज फॉर वुमन, जमशेदपुर**
पुष्पा मुर्मू, लक्ष्मी किस्कू, ललिता, चांदमनी हांसदा, कापरा टुडू, लक्ष्मी

तृतीय : **महिला कॉलेज, चाईबासा**
शिमला बानरा, आरशी, रेशमा मुर्मू, मीरा कुमारी, अंजेल डाडेल, सुप्रिया अकेत

कार्यक्रम प्रभारी
डॉ. मृत्युंजय महतो
श्रीमती मधु शर्मा

निर्णायक
श्री अशोक दास
विदुषी नूपुर गोस्वामी

ब्लॉग लेखन

विजेता

प्रथम :	**महिला कॉलेज, चाईबासा**	वंशिका कुमारी
द्वितीय :	**आई.आई.टी., धनबाद**	मोनू रजक
तृतीय :	• **जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय, जमशेदपुर**	सीमा मार्डी
	• **श्रीनाथ विश्वविद्यालय, जमशेदपुर**	अंशिका सिंह

कार्यक्रम प्रभारी
श्री अमित कुमार मिश्रा
डॉ. पिजुष मल्लिक
सुश्री जयश्रीमा बिस्वाल

निर्णायक
श्री ब्रजेश सिंह
श्री शशि भूषण

रील्स संचार

विजेता

प्रथम :	**गवर्नमेंट पॉलीटेक्निक कॉलेज, भागा**	राहुल मंडल
द्वितीय :	**मधुसूदन महतो टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, चक्रधरपुर**	अंजलि
तृतीय :	**पांडवेश्वर कॉलेज, पश्चिम बंगाल**	सुमित कुमार मुर्मु

कार्यक्रम प्रभारी
श्रीमती चंचला कुमारी महतो
दमयन्ती प्रमाणिक

निर्णायक
आतिफ हबीब (जमशेदपुर वाला)
आर.जे. मनोज

कुछ तुम कहो, कुछ हम कहें

विजेता

प्रथम : **महिला कॉलेज, चाईबासा** — सुचित्रा प्रधान, सुभद्रा कुमारी

द्वितीय : **रंभा कॉलेज ऑफ एजुकेशन, गीतिलता** — रीता तंतुबाई, सुमन डे

कार्यक्रम प्रभारी
श्रीमती लक्ष्मी महतो
सुश्री मनीषा महतो
श्री सन्नी कुमार

निर्णायक
श्री संदीप सावर्ण
श्री संदीप मुरारका

स्टार्टअप श्रीनाथ

विजेता

प्रथम : **श्रीनाथ विश्वविद्यालय, जमशेदपुर**
श्रीधर मिश्रा, वरुण कुमार शी, नवनीत कुमार, गीता रानी लोहार, सौम्या शुक्ला

द्वितीय : **राजकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज, आदित्यपुर**
सागर कुमार रजक, आयुष कुमार, राजकिशोर यादव, शुभम दुआरी, चिरंजीत कुंभकार

तृतीय : **मधुसूदन महतो टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, चक्रधरपुर**
बीरेन्द्र प्रधान, प्रवीण प्रुसेथ, गिलमन अनवर, डॉली महतो, सचिन महतो

कार्यक्रम प्रभारी
डॉ. प्रीति किरण
श्रीमती माधुरी कुमारी
श्री अमित कुमार मिश्रा

निर्णायक
श्री सागर चन्ना

प्रश्नोत्तरी

विजेता

प्रथम : **श्रीनाथ विश्वविद्यालय, जमशेदपुर**
राज कुमार, स्नेहा श्री

द्वितीय : **रंभा कॉलेज ऑफ एजुकेशन, गीतिलता**
राजकुमार गोप, सिमरन कुमारी

तृतीय : **जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय, जमशेदपुर**
काजल सिंह कुंतिया, संतोषी नाथ

कार्यक्रम प्रभारी
श्री विनय सिंह शांडिल्य
डॉ. सूर्य प्रताप सिंह
श्री अभिषेक कुमार
सुश्री जया रानी महतो

संस्कृति के आठ रंग (रंगोली)

विजेता

प्रथम : **श्रीनाथ विश्वविद्यालय, जमशेदपुर**
आभाश्री महतो, उषा महतो, अन्नू कुमारी मौर्य

द्वितीय : • **मधुसूदन महतो टीचर ट्रेनिंग कॉलेज, चक्रधरपुर**
बीरेंद्र दिग्गी चंपीया, स्वाति पूर्ति, अंशु टोप्पो

• **मॉडल कॉलेज, खरसावां**
पूजा प्रधान, मनीषा प्रधान, प्रीति कुमारी

तृतीय : • **साईनाथ विश्वविद्यालय, रांची**
अंशु गुप्ता, दीपिका कुमारी, रिज़वाना परवीन

• **जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज, जमशेदपुर**
रिम्मी कुमारी, प्राची सिन्हा, परिधि कुमारी

कार्यक्रम प्रभारी
डॉ. डॉली चक्रबर्ती
श्री राहुल बनिक

निर्णायक
श्रीमती विद्या तिवारी
श्रीमती सुधा गोयल

वाक् चातुर्य

विजेता

प्रथम	रंभा कॉलेज ऑफ एजुकेशन, गीतिलता	विकास भकत
द्वितीय	जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज, जमशेदपुर	विकास कुमार
तृतीय	जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय, जमशेदपुर	दिव्या कुमारी

कार्यक्रम प्रभारी
डॉ. पूजा श्रीवास्तव
डॉ. सुदर्शना बनर्जी

निर्णायक
आर.जे. अभय
आतिफ हबीब (जमशेदपुर वाला)

कहानी से कविता तक

विजेता

प्रथम : स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय — शालिनी तिवारी

द्वितीय : • श्रीनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, जमशेदपुर — अनुराधा प्रसाद

• मिसेज के.एम.पी.एम वोकेशनल कॉलेज, जमशेदपुर — तकदिश तबस्सुम

तृतीय : नेताजी सुभाष चंद्र बोस महाविद्यालय, संबलपुर — आशुतोष महाराणा

कार्यक्रम प्रभारी
श्री चंद्रशेखर मित्रा
श्रीमती संगीता महतो

निर्णायक
डॉ अरुण सज्जन
श्रीमती पदमा मिश्रा

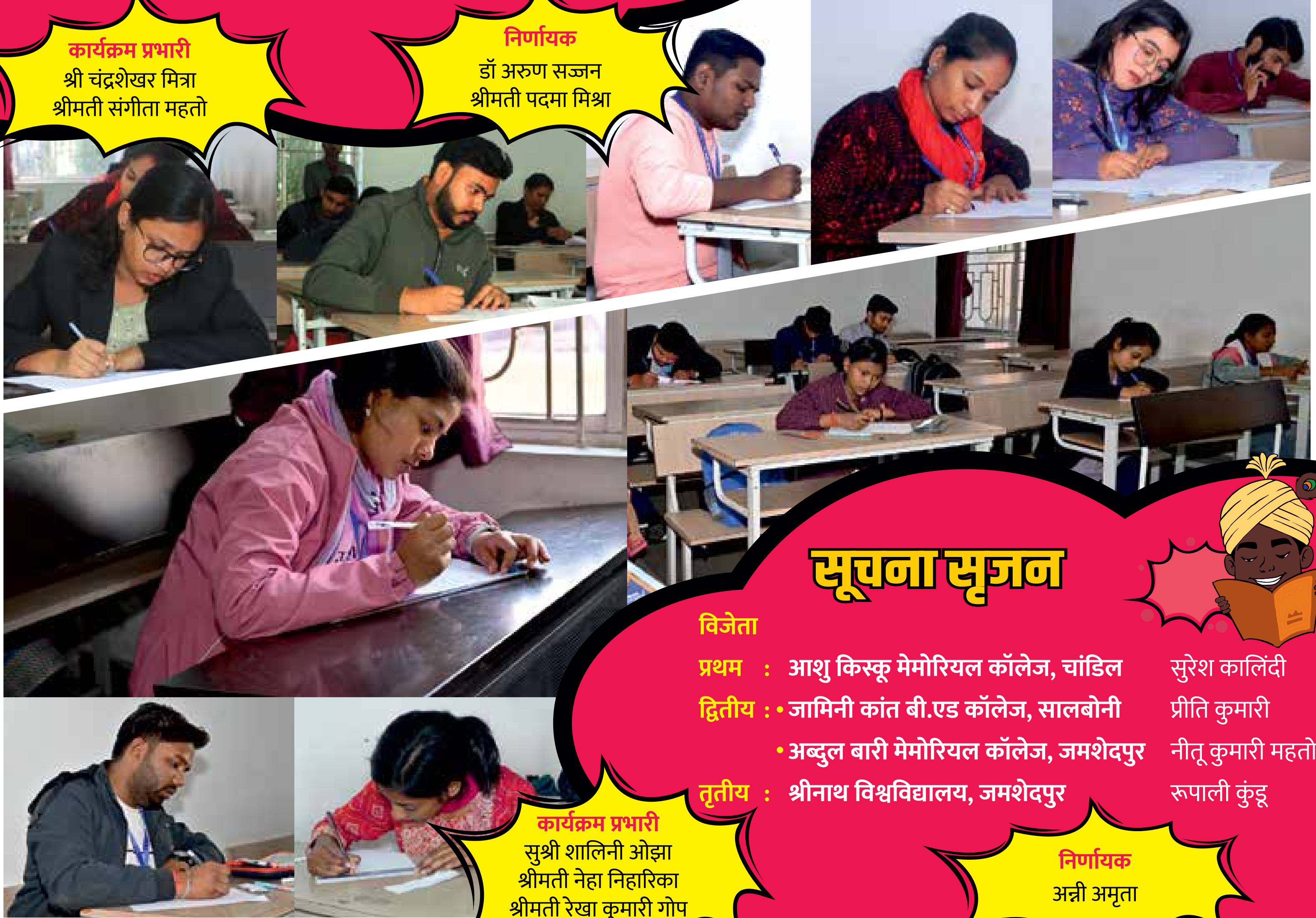

सूचना सृजन

विजेता

प्रथम : आशु किस्कू मेमोरियल कॉलेज, चांडिल — सुरेश कालिंदी

द्वितीय : • जामिनी कांत बी.एड कॉलेज, सालबोनी — प्रीति कुमारी

• अब्दुल बारी मेमोरियल कॉलेज, जमशेदपुर — नीतू कुमारी महतो

तृतीय : श्रीनाथ विश्वविद्यालय, जमशेदपुर — रूपाली कुंडू

कार्यक्रम प्रभारी
सुश्री शालिनी ओझा
श्रीमती नेहा निहारिका
श्रीमती रेखा कुमारी गोप

निर्णायक
अन्नी अमृता

लोरी लेखन

विजेता

प्रथम : मिसेज के.एम.पी.एम वोकेशनल कॉलेज, जमशेदपुर
तकदीस तबस्सुम, सौम्या कुमारी

द्वितीय : श्रीनाथ विश्वविद्यालय, जमशेदपुर
कविता कुमारी, जया सिंह

तृतीय : महिला कॉलेज, चाईबासा
चैती कुजुर, कंचनलता गागराई

कार्यक्रम प्रभारी
सुश्री श्रुति
सुनीता कुमारी
सुश्री पूजा कुमारी

निर्णायक
श्रीमती अरुणा झा
डॉ. नीलिमा कुमारी

रेडियो श्रीनाथ

विजेता

प्रथम :
- **महिला कॉलेज, चाईबासा**
  वंशिका कुमारी, मीरा कुमारी
- **एम.बी.एन.एस. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, आसनबनी**
  रेशमी महतो, ईशा जामुदा

द्वितीय :
- **राजकीय पालीटेक्निक, भागा, धनबाद**
  दीनबंधु, अनीश
- **श्रीनाथ विश्वविद्यालय, जमशेदपुर**
  जया सिंह, कविता कुमारी

तृतीय : **साईनाथ विश्वविद्यालय, रांची**
आदित्य आदर्श, राज नंदिनी सिंह

कार्यक्रम प्रभारी
श्री अजित मुर्मू
डॉ. शैलेश षाड़ंगी

निर्णायक
आर.जे. मनोज
आर.जे. अभय
आर.जे. राजीव

लघु नाटिका

विजेता

प्रथम : **महिला कॉलेज, चाईबासा**
कंचन गागराई, सुप्रिया, फातमा, मौसम कुमारी, रश्मि एलीना, मानसी, चैत्या

द्वितीय : **श्रीनाथ विश्वविद्यालय, जमशेदपुर**
आलोक, नवनीत कुमार, श्रीधर, सन्नी, जे. वाणीश्री अक्षत राठोर, सौरव सोनकर, सुब्रत सिंह

तृतीय : **मधुसूदन महतो टीचर ट्रैनिंग कॉलेज, चक्रधरपुर**
तपन प्रधान, लालमोहन सामड, विनोद कुमार गोप, एरिक साइमन, बीरेंद्र दिग्गी, सिमु गोदरा, गिलमन अनवर, किरेश्वर नायक

कार्यक्रम प्रभारी
श्रीमती सुमन सिंह
श्री रवि सिंह

निर्णायक
श्रीमती कृष्णा सिन्हा
श्रीमती दीपिका बनर्जी
श्री ललन शर्मा

पुरस्कार वितरण समारोह

मुख्य अतिथि :
डॉ. एस. एस. रज्जी
पूर्व कुलपति,
अरका जैन विश्वविद्यालय

सांस्कृतिक झलकियाँ

आयोजक
श्रीनाथ विश्वविद्यालय
यूजीसी द्वारा मान्यता प्राप्त | एआईसीटीई एवं पीसीआई द्वारा अनुमोदित
आदित्यपुर, जमशेदपुर (झारखण्ड) 831013
फोन : 1800-3455-5555
वेबसाइट : www.srinathuniversity.ac.in